● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

४. सोनू हाथी

– उमाकांत खुबालकर

जन्म : ७ अक्तूबर १९५३, नागपुर (महाराष्ट्र) **रचनाएँ :** १०८ बार, एक था सुब्रतो, पेपरवाला, रुकती नहीं नदी, व्यतिक्रम, तिर्यक रेखा ।
परिचय : उमाकांत जी ने प्रचुर मात्रा में बालसाहित्य लिखा है । आप आकाशवाणी और वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग से जुड़े रहें ।
प्रस्तुत एकांकी पशुओं के प्रति प्रेम तथा दयाभाव को जगाती है ।

स्वयं अध्ययन

रूपरेखा के आधार पर कोई कहानी लिखो ।

LCakSA

दृश्य १

(जंगल में लकड़हारा पेड़ काट रहा है । कुल्हाड़ी के वार से आहत हो पेड़ दर्द से कराहता है ।)

पेड़ : लकड़हारे भाई ! मुझे मत काटो । मैं आप सबके काम आनेवाला हूँ ।

विश्वास : मेरे बच्चे भूखे हैं । मैं क्या करूँ ? तुम्हारी लकड़ी काटकर बाजार में बेचूँगा, चार पैसे मिलेंगे । तभी चूल्हा जलेगा । बच्चों का कष्ट देखा नहीं जाता ।

पेड़ : **(भयभीत होकर)** नहीं–नहीं । रुक जाओ भाई । क्या पूरा काट डालोगे मुझे ? मैं भी तुम्हारे बेटे जैसा हूँ ।

विश्वास : ओफ ओ, बेटे का नाम ले लिया । मैं तुम्हें नहीं काट सकता । आज घर में चूल्हा नहीं जलेगा ।

पेड़ : तुमने इनसानियत दिखाई । चलो इनसानियत की इस बात पर तुम्हें एक अनोखा उपहार देता हूँ ।

विश्वास : **(खुश होकर)** कहते हैं न अंधे को आँख और भूखे को खाना इससे ज्यादा और क्या चाहिए ।

पेड़ : **(पार्श्व में नन्हे हाथी के चिंघाड़ने का स्वर गूँजता है ।)** ये नन्हा हाथी अपने परिवार से बिछड़ गया है । इसे तुम अपने साथ ले जाओ । यह बीमार है बेचारा, आठ दिनों से भूखा है ।

विश्वास : **(चौंककर)** क्या कहा ? इसको अपने साथ ले जाऊँ ? यहाँ तो अपने रहने का ठौर–ठिकाना नहीं है , इसे कहाँ रखूँगा ? क्या खिलाऊँगा ? और डॉक्टर को पैसे कहाँ से दूँगा ?

पेड़ : मेरी बात मानकर इसे अपने साथ ले जाओ । तुम्हारे काम अवश्य आएगा ।

विश्वास : यह कैसी सौदेबाजी है ? घर ले जाकर इसका क्या अचार डालूँगा ?

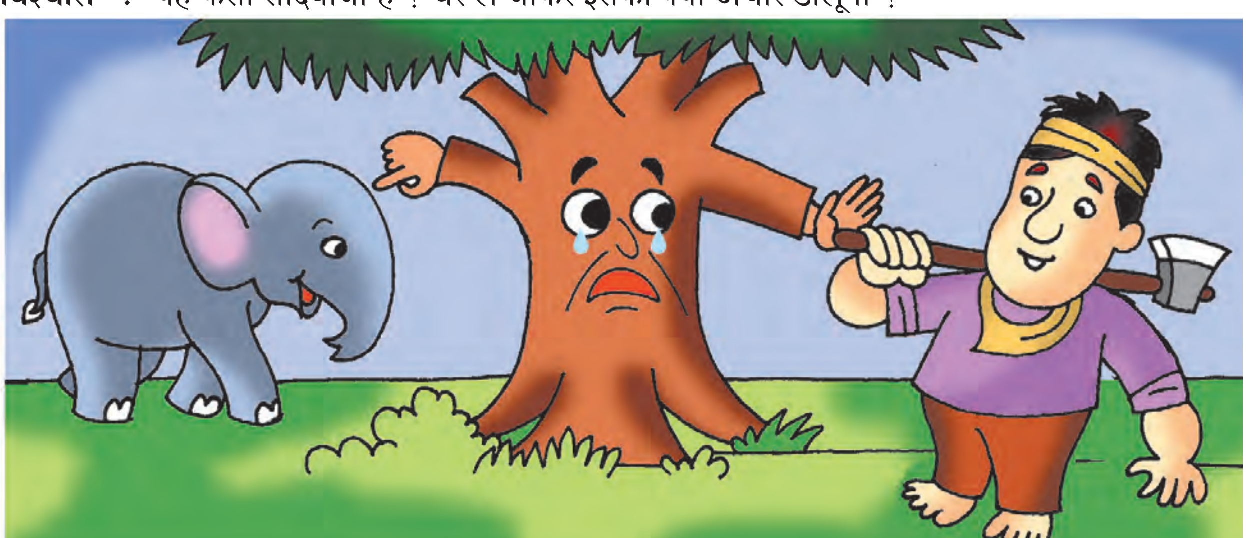

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । एकांकी के प्रमुख मुद्दों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें । अच्छे इनसान में क्या–क्या गुण होने चाहिए पूछें। किसी नियत विषय पर भाषण देने के लिए कहें।

सुनो तो जरा

पाठ में आए हुए मूल्यों को सुनो और सुनाओ ।

पेड़ : भई, मैं कई जगह से कटा हुआ हूँ । अब आँधी-तूफान में कैसे बचूँगा ? इसे अपने पास नहीं रख सकता । क्या यह तुम्हारा बेटा नहीं बन सकता ? क्या यह तुम्हारा प्यार नहीं पा सकता ?

विश्वास : ठीक कहते हो । तुम्हें काटकर मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है । अब दुबारा यह काम नहीं करूँगा। कोई-न-कोई रास्ता निकल आएगा । आज से मैं इसे सोनू कहूँगा । इसे देखकर बच्चे खुश होंगे ।

दृश्य २

(घर के आँगन में नन्हा हाथी और विश्वास खड़े हैं । सोनू स्वभाववश चिंघाड़ता है । सुमित्रा दरवाजा खोलकर बाहर आती है । पति के साथ नन्हे हाथी को देखकर चौंक पड़ती है ।)

विश्वास : **(सोनू से)** सोनू ये है तुम्हारी माता जी ।

सुमित्रा : **(झल्लाते हुए)** ये क्या देख रही हूँ ? घर में नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने ! किसको पकड़ लाए हो ? घर में दो बच्चे हैं, उनकी चिंता नहीं है तुम्हें? इसको भी ले आए। कहाँ रखोगे, क्या खिलाओगे ?

विश्वास : कुछ भी कह देती हो ? अब लौटा नहीं सकता । अपने हिस्से की आधी रोटी खिलाऊँगा इसे ।

दृश्य ३

(सोनू के चिंघाड़ने का स्वर उभरता है । विश्वास को बीमार और दुखी पाकर खूँटा तोड़कर घर के अंदर आने का प्रयास करता है।)

विश्वास : **(खुशी से)** आ जा मेरे लाड़ले, तेरे पास आते ही कलेजे में ठंडक पहुँच रही है । मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारे लिए ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहा हूँ ।

सुमित्रा : **(गुस्से से)** मैं तुम्हें इसे .... घर में नहीं रहने दूँगी।

विश्वास : ऐसा मत कहो । देखती नहीं यह कितना समझदार हो गया है । मुझे बीमार देखकर मेरे पास दौड़ा चला आया । अब तो बच्चे भी इसे पसंद करने लगे हैं ।

सुमित्रा : **(सिसकती हुई)** मैं इसकी दुश्मन थोड़े ही हूँ । मुझे अफसोस इस बात का है कि इसे भी अपने साथ भूखा रहना पड़ रहा है । घर में फूटी कौड़ी नहीं है । कहाँ से दाना-पानी जुटाऊँ ?

विश्वास : यही तो जिंदगी है भागवान । इनसान को खूब लड़ना पड़ता है । चल बेटा सोनू बाहर चल, तुझे कुछ

जरा सोचो .... लिखो

यदि तुम्हें भी कोई हाथी का बच्चा मिल जाए तो ...

खिला-पिलाकर लाता हूँ । तेरे लिए दवा ले आता हूँ ।

सुमित्रा : नहीं ? मैं तुम्हें इस बीमार हालत में बाहर नहीं जाने दूँगी । मैं ही सोनू को खिलाती-पिलाती हूँ ।

विश्वास : **(कुछ सोचकर)** सुना है, पड़ोस के गाँव में बहुत बड़ा मेला लगा है । सोनू को भी साथ ले जाऊँगा । गाँववाले इसे केले और गन्ने खिलाएँगे । **(सोनू विश्वास की बात समझकर स्वीकृति में सिर हिलाता है ।)**

सुमित्रा : मैं भी चलूँगी साथ में । बच्चे भी चलेंगे । **(वह सोनू के गले लिपट जाती है ।)**

बड़ा बेटा : पिता जी, सोनू के ठीक हो जाने पर हम उसे उसके असली घर जंगल में छोड़ देंगे ।

मैंने समझा

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद का कोई भाषण पढ़ो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

पार्श्व = पीछे

ठौर-ठिकाना = सुरक्षित रहने का स्थान

सौदेबाजी = मोल-भाव की क्रिया

कलेजा = हृदय

मुहावरे

फूटी कौड़ी न होना = कुछ भी न होना

अफसोस होना = दुखी होना

कहावतें

अंधे को आँख और भूखे को खाना = जरूरतमंद को जरूरत की चीज मिलना

घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने = पैसों के अभाव में भी बड़ा काम करने की तैयारी

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

✻ जोड़ियाँ मिलाओ :

‘अ’	‘ब’
(क) पेड़	सोनू हाथी
(ख) दो बच्चे	मेला
(ग) बीमार	अनोखा उपहार
(घ) पड़ोस का गाँव	भूखे
	सवारी

खोजबीन

अपने आस-पास के वृक्षों के नामों का पत्तों के आकारानुसार वर्गीकरण करो ।

छोटे	मध्यम	बड़े

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक परिस्थिति का सामना हँसते हुए करना चाहिए ।

भाषा की ओर

अर्थ के आधार पर वाक्य पढ़ो, समझो और उचित स्थान पर लिखो :

१. बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे ।

५. वाह ! क्या बनावट है ताजमहल की !

२. माला घर नहीं जाएगी ।

३. इसे हिमालय क्यों कहते हैं ?

६. कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा ।

७. खूब पढ़ो खूब बढ़ो ।

४. सदैव सत्य के पथ पर चलो ।

८. यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी ।

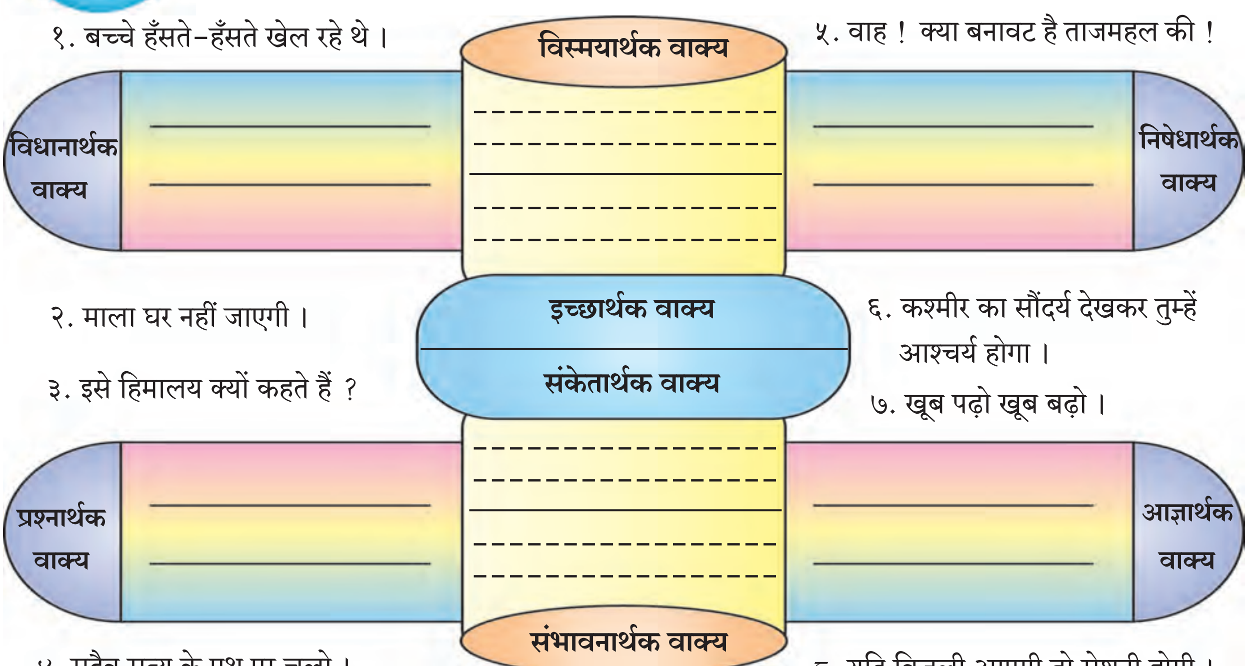

पहले वाक्य में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है । अतः यह वाक्य **विधानार्थक वाक्य** है । दूसरे वाक्य में आने का अभाव सूचित होता है क्योंकि इसमें **नहीं** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **निषेधार्थक वाक्य** है । तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछने का बोध होता है । इसके लिए **क्यों** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **प्रश्नार्थक वाक्य** है । चौथे वाक्य में आदेश दिया है । इसके लिए **चलो** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **आज्ञार्थक वाक्य** है । पाँचवें वाक्य में विस्मय-आश्चर्य का भाव प्रकट हुआ है । इसके लिए **वाह** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **विस्मयार्थक वाक्य** है । छठे वाक्य में संदेह या संभावना व्यक्त की गई है । इसके लिए **होगा** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संभावनार्थक वाक्य** है । सातवें वाक्य में इच्छा, आशीर्वाद व्यक्त किया गया है । इसके लिए **खूब पढ़ो, खूब बढ़ो** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **इच्छार्थक वाक्य** है । आठवें वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है । इसके लिए **बिजली, रोशनी** शब्दों का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संकेतार्थक वाक्य** है ।